BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

भारत की भाषाई विरासत का संरक्षण

27 अक्टूबर, 2025

मुख्य बिंदु
• भारत सरकार ने 3 अक्टूबर 2024 को मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली भाषाओं को 'शास्त्रीय भाषा' का दर्जा प्रदान किया। • अक्टूबर 2025 तक, **कुल 11 भारतीय भाषाओं** को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। • वर्ष 2004 से 2024 के बीच छह भारतीय भाषाओं, तमिल, संस्कृत, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और उड़िया शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया गया था।

प्रस्तावना

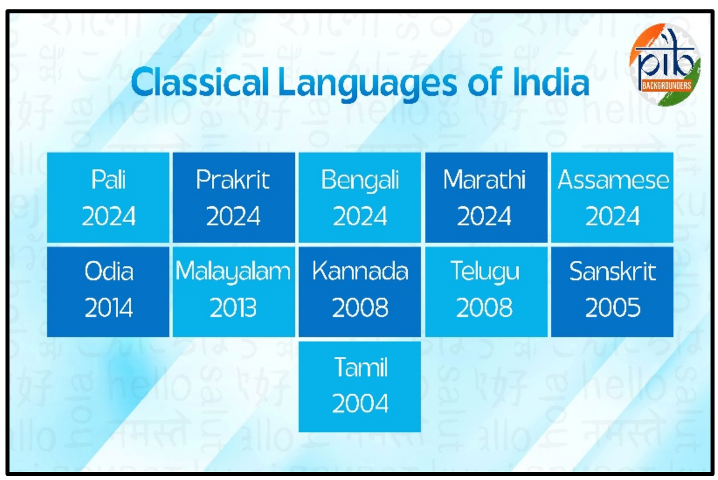

भारत की भाषाई विरासत समृद्ध और विविध है और देश भर में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। भारत सरकार विभिन्न नीतियों, कार्यक्रमों और पहलों के ज़रिए देश की भाषाई विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए लगातार काम कर रही है। इन भाषाओं को मान्यता और संवर्धन देते हुए प्राचीन जड़ों वाली भाषाओं को "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा प्रदान करना भी एक अहम कदम है, जो भाषाएं हज़ारों वर्षों की साहित्य, दर्शन और संस्कृति की समृद्ध विरासत भारत की सांस्कृतिक पहचान को आकार देती है। भारत सरकार कुछ विशिष्ट मानदंडों को पूरा करने वाली भाषाओं को "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा प्रदान करती है और इन भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए सहायता प्रदान करती है। 3 अक्टूबर 2024 को केंद्रीय मंत्रिमंडल

ने मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को इस श्रेणी में जोड़ने को मंज़ूरी दी, जिससे देश में शास्त्रीय भाषाओं की कुल संख्या 11 हो गई।[1]

शास्त्रीय भाषा का दर्जा क्यों महत्वपूर्ण है

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता देना, उसके ऐतिहासिक महत्व और भारत की सांस्कृतिक तथा बौद्धिक पहचान पर उसके गहन प्रभाव को सम्मान और मान्यता प्रदान करने का एक तरीका है, साथ ही हज़ारों सालों से चले आ रहे प्राचीन ज्ञान, दर्शन और मूल्यों को संरक्षित और प्रसारित करने का भी तरीका है। यह दर्जा न केवल उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, बल्कि इन भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और आगे के अध्ययन के प्रयासों को भी बढ़ावा देता है, जिससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि वे आज की दुनिया में प्रासंगिक बनी रहें।

भाषा को "शास्त्रीय" बनाने का पैमाना

भारत सरकार ने संस्कृति मंत्रालय के ज़रिए और भाषाई तथा ऐतिहासिक विशेषज्ञों के परामर्श से, किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में नामित करने के लिए मानदंड स्थापित किए हैं।[2]

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में वर्गीकृत करने के मानदंडों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- उसके प्रारंभिक ग्रंथों या लिखित इतिहास की प्राचीनता, जो 1,500-2,000 वर्षों की अवधि तक फैली हो।
- प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का एक संग्रह, जिसे बोलने वालों की पीढ़ियों द्वारा विरासत माना जाता है।
- ज्ञान ग्रंथ, विशेष रूप से गद्य ग्रंथ, काव्य, पुरालेखीय और शिलालेखीय साक्ष्य।
- शास्त्रीय भाषा और उसका साहित्य अपने वर्तमान स्वरूप से भिन्न हो सकता है या मूल से प्राप्त बाद के रूपों से अलग हो सकता है।

भारत की भाषाई विरासत का विस्तार: 2024 में नई भाषाएँ

2004 और 2014 के बीच छह भाषाओं, तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उड़िया को शास्त्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई थी। 3 अक्टूबर 2024 को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को इस श्रेणी में जोड़ने को मंज़ूरी दी, जिससे मान्यता प्राप्त शास्त्रीय भाषाओं की संख्या बढ़कर 11 हो गई।

मराठी

---

[1]https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/cabinet-approves-conferring-status-of-classical-language-to-marathi-pali-prakrit-assamese-and-bengali-languages/

[2]https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=103014

मराठी एक **भारतीय-आर्यन भाषा** है, जो मुख्यतः **भारत के महाराष्ट्र** में बोली जाती है। इसका एक हज़ार साल से भी ज़्यादा पुराना समृद्ध साहित्यिक इतिहास है। लगभग **11 करोड़** देशी वक्ताओं के साथ, मराठी **दुनिया की शीर्ष 15 सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।**[3]

इसकी जड़ें **2500 साल** से भी ज़्यादा पुरानी हैं, और इसकी उत्पत्ति **प्राचीन महारथी**, **मराठथी, महाराष्ट्री प्राकृत और अपभ्रंश मराठी** जैसी भाषाओं से हुई है। इस भाषा में कई अहम बदलाव हुए हैं, लेकिन इसने विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में अपनी निरंतरता बनाए रखी है।

- आधुनिक मराठी इस क्षेत्र में बोली जाने वाली प्राचीन भाषाओं से विकसित हुई, जिसकी शुरुआत **महाराष्ट्री प्राकृत** से हुई, जो **सातवाहन युग** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईसवी) के दौरान बोली जाने वाली प्राकृत भाषाओं की एक बोली थी।

मराठी साहित्य का योगदान

- **गाथासप्तशती**, जो सबसे प्राचीन मराठी साहित्यिक कृति है, लगभग **2000 वर्ष पुरानी** है और **प्रारंभिक मराठी काव्य** की उत्कृष्टता को उजागर करती है।
- यह **सातवाहन राजा हाला** द्वारा रचित काव्य संग्रह है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसे **पहली शताब्दी ईसवी** में संकलित किया गया था। इसके बाद, करीब **आठ शताब्दियों पहले** मराठी के परिपक्व भाषाई स्तर पर पहुँचने के बाद **लीलाचरित्र और ज्ञानेश्वरी** का उदय हुआ।
- कई शिलालेख, ताम्रपत्र, पांडुलिपियाँ और प्राचीन धार्मिक ग्रंथ (पोथियाँ) मराठी की समृद्ध ऐतिहासिक जड़ों को खूबसूरती से दर्शाते हैं।
- **नाणेघाट शिलालेख** एक असाधारण कलाकृति है, जो 2500 वर्ष पूर्व मराठी के प्रयोग को उजागर करती है।
- इसके अलावा, मराठी का उल्लेख प्राचीन भारतीय लेखन, जैसे **विनयपिटक, दीपवंश और महावंश**, के साथ-साथ **कालिदास और वररुचि** जैसे प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं में भी मिलता है।
- मराठी की साहित्यिक विरासत में **संत ज्ञानेश्वर, नामदेव और तुकाराम** जैसे कई अन्य संतों की रचनाएं शामिल हैं, जिनके योगदान को व्यापक रूप से सम्मान दिया जाता है।

पाली

प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए पाली का अध्ययन बेहद ज़रूरी है, क्योंकि इसके साहित्य में अतीत पर प्रकाश डालने वाली बहुमूल्य सामग्रियाँ हैं। कई पाली ग्रंथ अभी भी पांडुलिपियों में छिपे हुए हैं, जिनकी पहुँच मुश्किल है। श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड जैसे बौद्ध देशों और चटगाँव जैसे क्षेत्रों के साथ-

[3] https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153318&ModuleId%20=%202

साथ जापान, कोरिया, तिब्बत, चीन और मंगोलिया में भी पाली का अध्ययन जारी है, जहाँ अधिकांश बौद्ध रहते हैं।

• पाली के प्रारंभिक संदर्भ बौद्ध विद्वान बुद्धघोष की टीकाओं में मिलते हैं।

पाली भाषा का साहित्यिक योगदान

पाली विभिन्न बोलियों से बुनी एक समृद्ध लिपि है, जिसे प्राचीन भारत में बौद्ध और जैन संप्रदायों ने अपनी पवित्र भाषा के रूप में अपनाया था। लगभग 500 ईसा पूर्व भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश देने के लिए पाली का उपयोग किया, जिससे यह उनकी शिक्षाओं के प्रसार का एक प्रमुख माध्यम बन गया। बौद्ध प्रामाणिक साहित्य का संपूर्ण संग्रह पाली में लिखा गया है, खासकर त्रिपिटक में, जिसका अर्थ है "त्रिकोणीय टोकरी"।

- पहली टोकरी, विनय पिटक, बौद्ध भिक्षुओं के लिए मठवासी नियमों की रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जो नैतिक आचरण और सामुदायिक जीवन के लिए एक खाका प्रदान करती है।
- दूसरी टोकरी, सुत्त पिटक, बुद्ध के भाषणों और संवादों का खजाना है, जो उनके ज्ञान और दार्शनिक अंतर्दृष्टि को समेटे हुए है।
- अंत में, अभिधम्म पिटक नैतिकता, मनोविज्ञान और ज्ञान के सिद्धांत से संबंधित विभिन्न विषयों पर गहराई से विचार करता है, और मन और वास्तविकता का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

पाली साहित्य में जातक कथाएँ शामिल हैं, जो बोधिसत्व या भावी बुद्ध के रूप में बुद्ध के पूर्व जन्मों की गैर-प्रामाणिक कथाएँ हैं। ये कहानियाँ भारतीय साझी विरासत से जुड़ती हैं और साझा नैतिक मूल्यों और परंपराओं को दर्शाती हैं। साथ ही ये भारतीय विचार और आध्यात्मिकता के संरक्षण में भी पाली की भूमिका को उजागर करती हैं।

प्राकृत

प्राकृत, जो मध्यकालीन भारतीय-आर्य भाषाओं के एक समूह का प्रतिनिधित्व करती है, भारत की समृद्ध भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को समझने का अभिन्न अंग है। यह प्राचीन भाषा न केवल कई आधुनिक भारतीय भाषाओं का आधार है, बल्कि उन विविध परंपराओं और दर्शनों को भी समाहित करती है, जिन्होंने इस उपमहाद्वीप के ऐतिहासिक आख्यान को आकार दिया है। आदि शंकराचार्य के अनुसार, "वाचः प्राकृत संस्कृतौ श्रुतिगिरो" - प्राकृत और संस्कृत भाषाएँ भारतीय ज्ञान की सच्ची संवाहक हैं।

प्राकृत भाषा का योगदान

भाषाविदों और विद्वानों के बीच प्राकृत भाषा को व्यापक मान्यता प्राप्त है। पाणिनि, चंद, वररुचि और समंतभद्र जैसे आचार्यों ने इसकी व्याकरण को आकार दिया। महात्मा बुद्ध और महावीर ने अपने उपदेशों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्राकृत का प्रयोग किया। इसका प्रभाव क्षेत्रीय साहित्य में भी देखा जा सकता है, जहाँ ज्योतिष, गणित, भूविज्ञान, रसायन विज्ञान और वनस्पति विज्ञान जैसे क्षेत्रों में नाट्य,

काव्य और दार्शनिक रचनाओं का योगदान है। प्राकृत भारतीय भाषाविज्ञान और बोलियों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है और इसकी एक समृद्ध विरासत है। राष्ट्रभाषा हिंदी परंपरा प्राकृत-अपभ्रंश से विकसित हुई है। वैदिक भाषा में भी प्राकृत के महत्वपूर्ण तत्व विद्यमान हैं, जो भारत के भाषाई विकास को समझने के लिए इसके अध्ययन के महत्व को दर्शाते हैं। प्राकृत शिलालेख महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेखों के रूप में कार्य करते हैं, जो भारत के इतिहास की जानकारी देते हैं। मौर्य-पूर्व काल के शिलालेख, साथ ही राजा अशोक और खारवेल के शिलालेख, मुख्यतः प्राकृत में लिखे गए हैं।

- आचार्य भरतमुनि ने अपनी मौलिक कृति 'नाट्यशास्त्र' में प्राकृत को बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा माना है, जो कलात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक विविधता के लिहाज़ से काफी समृद्ध है।
- यह मान्यता आम लोगों के बीच संचार के एक माध्यम के रूप में प्राकृत की सुगमता और महत्व पर ज़ोर देती है।

हिंदी, बंगाली और मराठी जैसी भाषाओं का विकास प्राकृत से हुआ है, जो आधुनिक भाषाओं की उत्पत्ति और विकास की व्यापक समझ के लिए प्राकृत साहित्य को समझने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

असमिया

असम की आधिकारिक भाषा की जड़ें संस्कृत में हैं, जिसका विकास 7वीं शताब्दी ईसवी पूर्व में हुआ था। हालाँकि, इसका प्रत्यक्ष पूर्वज मगधी अपभ्रंश है, जो पूर्वी प्राकृत से नज़दीक से जुड़ी एक बोली है। भाषाविद् जी.ए. ग्रियर्सन ने उल्लेख किया है कि मगधी इस क्षेत्र की प्रमुख बोली थी, जबकि पूर्वी समकक्ष, प्राच्य अपभ्रंश, दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व में फैलीं और अंततः आधुनिक बंगाली में विकसित हुई। जैसे-जैसे प्राच्य अपभ्रंश का पूर्व में विस्तार हुआ, यह गंगा के उत्तर को पार करके असम घाटी में पहुँची, जहाँ यह असमिया में तब्दील हो गई।[4] असमिया का सबसे पहला उल्लेख कथा गुरुचरित में मिलता है। "अक्षोमिया" (असमिया) शब्द की उत्पत्ति विविध व्याख्याओं पर आधारित है। कुछ विद्वान इसे भौगोलिक विशेषताओं से जोड़ते हैं, जबकि अन्य इसे अहोम वंश से जोड़ते हैं, जिसने इस क्षेत्र पर छह शताब्दियों तक शासन किया। उत्तर बंगाल सहित ब्रह्मपुत्र घाटी को महाभारत में प्राग्ज्योतिषपुर और चौथी शताब्दी ईसवी के समुद्रगुप्त के स्तंभलेख में कामरूप कहा गया है। अंग्रेजीकृत शब्द "असम", ब्रह्मपुत्र घाटी को दर्शाने वाले "अक्षोम" से उत्पन्न हुआ है, और इसी से "असमिया" विकसित हुआ, जो इस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा को दर्शाता है। आठवीं शताब्दी ईस्वी तक, असमिया एक भाषा के रूप में पहले से ही फल-फूल रही थी। असमिया की उड़िया और बंगाली के साथ एक साझा भाषाई विरासत है, और ये सभी एक ही मूल बोली, मगधी अपभ्रंश से उत्पन्न हुई हैं।

असमिया भाषा का साहित्यिक योगदान

---

[4] History Of Assamese Literature by Birinchi Kumar Baruahttps: //www.indianculture.gov.in/rarebooks/linguistic-survey-india-vol-i-0 Page No. 125-126 of Indian Linguistic Survey

- पूर्व-आधुनिक असमिया लिपि का सबसे पहला उदाहरण चर्यापदों में मिलता है, जो बौद्ध सिद्धाचार्यों द्वारा रचित प्राचीन बौद्ध तांत्रिक ग्रंथ हैं और 8वीं और 12वीं शताब्दी के बीच के हैं।
- चर्यापदों का असमिया और अन्य मगध भाषाओं के साथ घनिष्ठ संबंध है, जो कई भारतीय भाषाओं के विकास के चरणों को दर्शाता है।
- चर्यापदों की शब्दावली में ऐसे शब्द शामिल हैं, जो विशिष्ट रूप से असमिया हैं।
- इसके अलावा, ध्वनि और रूपात्मकता की दृष्टि से, शब्दावली विशिष्ट असमिया शब्दों से काफी मिलती-जुलती है, जिनमें से कई आधुनिक भाषा में भी मौजूद हैं।

बंगाली

भारत की सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक, बंगाली, उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक और भाषाई इतिहास में एक अहम स्थान रखती है। बंगाली में ऐसे कवि, लेखक और विद्वान हुए हैं, जिन्होंने न केवल बंगाल की सांस्कृतिक पहचान को बल्कि भारत की राष्ट्रीय चेतना को भी आकार दिया है। बंगाली की प्रारंभिक रचनाएँ 10वीं और 12वीं शताब्दी ईसवी में देखी जा सकती हैं।[5] संस्कृत महाकाव्यों के प्रारंभिक अनुवादों से लेकर 19वीं और 20वीं शताब्दी के क्रांतिकारी लेखन तक, बंगाली साहित्य ने सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक आंदोलनों को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- बंगाली, असमिया और उड़िया, साथ ही मगधी, मैथिली और भोजपुरी, दक्षिण-पूर्व क्षेत्र में अन्य भाषाओं के साथ एक भाषाई समूह बनाती है। इसका तात्कालिक स्रोत मगधी प्राकृत, जिसे पूर्वी प्राकृत भी कहा जाता है, में पाया जा सकता है, जिसकी उत्पत्ति मगध (या बिहार) से हुई थी।
- गौड़-बंग भाषा, अन्य पूर्वी भाषाओं के साथ, मगध अपभ्रंश से विकसित हुई।
- आनुवंशिक रूप से, बंगाली इंडो-आर्यन (आईए) भाषाओं से ली गई है, जो इंडो-यूरोपीय परिवार की इंडो-ईरानी शाखा की इंडिक उप-शाखा से संबंधित हैं।

बंगाली भाषा का साहित्यिक योगदान

प्राचीन बांग्ला के सबसे पुराने उपलब्ध नमूने, बौद्ध भिक्षुओं द्वारा रचित 47 आध्यात्मिक भजन हैं, जिन्हें अब **चर्यापद** के नाम से जाना जाता है। चर्यापद भजनों का भाषाई और साहित्यिक दोनों ही महत्व है। चर्यापद भजनों के रचनाकारों, सिद्धाचार्यों में लुईपा, भुसुकुपा, कहनपा और सवर्पा शामिल हैं।

प्रारंभिक बंगाली साहित्यिक कृतियों का इतिहास 10वीं और 12वीं शताब्दी ईसवी में मिलता है, जिसकी शुरुआत महान संस्कृत महाकाव्यों के व्यापक अनुवादों से हुई थी। 16वीं शताब्दी चैतन्यानंद के नेतृत्व में धार्मिक सुधारों और रघुनाथ और रघुनंदन द्वारा पोषित पवित्र धर्म के साथ एक अहम मोड़ साबित हुई। बाद की शताब्दियों में मौलिक रचनाओं का उदय हुआ, जिनमें मुकुंद राम जैसे उल्लेखनीय व्यक्ति शामिल थे, जिन्हें अक्सर "बंगाल का चौसर" कहा जाता है, और बाद में भरत चंद्र और राम प्रसाद जैसे साहित्यिक गुरु हुए।

---

[5] https://wb.gov.in/our-culture-literature.aspx

- 19वीं शताब्दी बंगाली साहित्य के लिए एक स्वर्णिम युग थी, जिसमें राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसी प्रभावशाली हस्तियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- संवाद कौमुदी, सोम प्रकाश और बंदे मातरम जैसे समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अहम भूमिका निभाई और जनता को एकजुट करने में लिखित शब्दों की शक्ति को उजागर किया।
- बंकिम चंद्र चटर्जी ने बंगाली कथा साहित्य का बीड़ा उठाया, जबकि रवींद्रनाथ टैगोर, माइकल मधुसूदन दत्ता, सुकांत भट्टाचार्य और काजी नज़रुल इस्लाम जैसे कवियों ने साहित्यिक क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को गति दी।
- नेताजी सुभाष चंद्र बोस के 'जय हिंद' और बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय के 'वंदे मातरम' जैसे नारे पूरे देश में गूंजते रहे और पीढ़ियों को प्रेरित करते रहे।
- रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित हमारा राष्ट्रगान 'जन गण मन' और बंकिम चंद्र द्वारा रचित हमारा राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम', दोनों ही बंगाली कवियों की देन हैं।

शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदम

शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं का संवर्धन, शिक्षा मंत्रालय के भाषा ब्यूरो के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) के माध्यम से किया जाता है। इसके अतिरिक्त, शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और संवर्धन के लिए स्वतंत्र रूप से या सीआईआईएल के अंतर्गत विशेष केंद्र स्थापित किए गए हैं।

2020 में, संस्कृत के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए संसद के एक अधिनियम के ज़रिए तीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। ये हैं: नई दिल्ली स्थित केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय और श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा तिरुपति स्थित राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय। इसके अलावा, आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों और शोध संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

प्राचीन तमिल ग्रंथों के अनुवाद की सुविधा प्रदान करके, शोध को समर्थन देकर और विश्वविद्यालय के छात्रों और विद्वानों के लिए शास्त्रीय तमिल में पाठ्यक्रम प्रदान करके, शास्त्रीय तमिल साहित्य को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान की स्थापना की गई है।

शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और संरक्षण को और अधिक बढ़ावा देने के लिए, मैसूरु में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) के अंतर्गत शास्त्रीय कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओडिया में उत्कृष्टता केंद्र भी स्थापित किए गए हैं।

शास्त्रीय भाषा केंद्रों की प्रमुख गतिविधियाँ और उद्देश्य

- भारत की शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य का संवर्धन, प्रचार और संरक्षण।
- अनुसंधान और दस्तावेज़ीकरण।
- राज्य संग्रहालयों और अभिलेखागारों की मदद से पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण।

• पुस्तकें, शोध रिपोर्ट और पांडुलिपि सूचीपत्र प्रकाशित करना।

• शास्त्रीय ग्रंथों का भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद।

• दृश्य-श्रव्य दस्तावेज़ीकरण: प्रख्यात विद्वानों और शास्त्रीय ग्रंथों पर वृत्तचित्रों का निर्माण।

• शास्त्रीय भाषाओं को पुरालेखशास्त्र, पुरातत्व, नृविज्ञान, मुद्राशास्त्र और प्राचीन इतिहास से जोड़ने वाले अध्ययनों को बढ़ावा देना।

• शास्त्रीय विरासत को स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों से जोड़ते हुए ज्ञानमीमांसीय अध्ययन करना।

- **चेन्नई स्थित केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान**, तमिल के शास्त्रीय चरण से संबंधित, प्रारंभिक काल से लेकर 600 ईसवी तक, व्यापक शोध कर रहा है। इसमें तोलकाप्पियम्-सबसे प्राचीन विद्यमान तमिल व्याकरण ग्रंथ, नत्रिणै, पूर्णानूरु, कार नारपतु जैसे 41 प्राचीन तमिल ग्रंथ आदि शामिल हैं। केंद्र तमिल की प्राचीनता का अध्ययन करने के लिए बहु-विषयक विद्वानों को नियुक्त कर रहा है, द्रविड़ तुलनात्मक व्याकरण और तमिल बोलियों के अध्ययन पर शोध कर रहा है, विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों में तमिल पीठों का निर्माण कर रहा है, संस्थानों और शोधकर्ताओं को अल्पकालिक शोध परियोजनाओं के लिए अनुदान सहायता प्रदान कर रहा है, और इसके कई कार्यकलापों में शामिल है।

यह केंद्र प्राचीन तमिल ग्रंथों का कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी कर रहा है। इस परियोजना के तहत तिरुक्कुरल का 28 भारतीय और 30 से अधिक विश्व भाषाओं में और ब्रेल में भी अनुवाद किया गया है। केंद्र शास्त्रीय तमिल ग्रंथों को ब्रेल लिपि में प्रकाशित कर रहा है और एक शास्त्रीय तमिल शब्दकोश संकलित कर रहा है

- **शास्त्रीय तेलुगु अध्ययन उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीटी)** सीआईआईएल के अंतर्गत स्थापित किया गया है और यह वेंकटचलम, एसपीएसआर नेल्लोर (आंध्र प्रदेश) स्थित परिसर से संचालित होता है। सीईएससीटी ने विस्तृत जानकारी के साथ करीब 10,000 शास्त्रीय महाकाव्यों का एक डेटाबेस संकलित किया है। इसमें नाटक, आंध्र और तेलंगाना के मंदिर, गाँव के अभिलेख आदि शामिल हैं। सभी तेलुगु शिलालेखों को संपादित करके "तेलुगु सासनालु" नामक एक पुस्तक में संकलित किया गया है। प्रथम तेलुगु व्याकरण, 'आंध्र शब्द चिंतामणि' और अग्रणी छंद रचना, 'कविजनश्रमम' का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है।
- **शास्त्रीय कन्नड़ अध्ययन उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीके)** सीआईआईएल के तहत स्थापित किया गया है और यह मैसूर विश्वविद्यालय परिसर, मैसूर में एक समर्पित पुस्तकालय, सांस्कृतिक प्रयोगशाला और नई सम्मेलन सुविधाओं के साथ संचालित होता है। सीईएससीके ने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से रोडमैप मीटिंग और शास्त्रीय कन्नड़ के प्रसार जैसे विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं। केंद्र चार आधारभूत क्षेत्रों में कार्य करता है: अनुसंधान, शिक्षण, दस्तावेज़ीकरण और प्रसार। इसने 7 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और 22 अन्य पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार हैं। कवि-संत अन्नामाचार्य

द्वारा रचित प्रथम संगीत स्वर रचना 'संकीर्तन लक्षणम्', जो मूल रूप से संस्कृत में लिखी गई थी, का कन्नड़ में अनुवाद किया गया है।

- **शास्त्रीय ओड़िया अध्ययन उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीओ)** की स्थापना सीआईआईएल के अंतर्गत की गई है और यह भुवनेश्वर स्थित पूर्वी क्षेत्रीय भाषा केंद्र में स्थित है। यह केंद्र शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य की विरासत को बढ़ावा देने, प्रचारित करने और संरक्षित करने के साथ-साथ अनुसंधान और दस्तावेज़ीकरण को प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। इसने ओड़िया जैसी शास्त्रीय भाषाओं के स्रोतों पर आधारित परियोजनाएँ शुरू की हैं, जिनमें शिलालेखों का विश्लेषण, भित्ति चित्रों का भाषाई अध्ययन, पुरातात्विक अवशेष, पुराने ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियाँ और विभिन्न प्राचीन ग्रंथों से संदर्भों का संकलन शामिल है।
- **शास्त्रीय मलयालम अध्ययन उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीएम)** की स्थापना सीआईआईएल के तहत थुंचत एज़ुथचन मलयालम विश्वविद्यालय, तिरूर, मलप्पुरम, केरल में राज्य सरकार द्वारा प्रदान की गई है।

निष्कर्ष

“विरासत भी, विकास भी”–भारत के प्रधानमंत्री का यह प्रेरक मंत्र भारत की समृद्ध विरासत को प्रगतिशील विकास के साथ संतुलित करने का सार पेश करता है। देश की शास्त्रीय भाषाएँ, संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम और उड़िया इसी दृष्टिकोण के जीवंत प्रतीक हैं, जो हमारी सभ्यता के बौद्धिक और सांस्कृतिक खजाने को दुनिया के सामने पेश करती हैं। इसके अलावा, मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को शास्त्रीय भाषाओं का दर्जा देने का सरकार का फैसला भी भारत की बौद्धिक विरासत को आकार देने में इन भाषाओं की अमूल्य भूमिका की गहन मान्यता को दर्शाता है। सरकार के प्रयासों ने संस्थानों, विद्वानों और युवाओं को हमारी प्राचीन परंपराओं से जुड़ने में सक्षम बनाया है। भावी पीढ़ियों के लिए इन भाषाओं को सुरक्षित रखकर, प्रधानमंत्री मोदी आत्मनिर्भर भारत और सांस्कृतिक रूप से जड़ित भारत के उद्देश्यों के अनुरूप, सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता के एक व्यापक दृष्टिकोण को और मज़बूत कर रहे हैं। उनके समर्पण की वजह से ही भारत की ऐतिहासिक आवाज़ें एक आधुनिक, आत्मविश्वासी भारत में गुंजायमान हैं।

संदर्भ

पीएमओ इंडिया

https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/highlights-from-the-pms-address-on-the-79th-independence-day/

https://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/cabinet-approves-conferring-status-of-classical-language-to-marathi-pali-prakrit-assamese-and-bengali-languages/

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

https://www.indiaculture.gov.in/

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

https://ccrtindia.gov.in/resources/literary-arts/

https://www.slbsrsv.ac.in/faculties-and-departments/faculty-sahitya-and-sanskriti/department-prakrit

प्रेस सूचना ब्यूरो

https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=103014

https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153317&ModuleId+=+2

https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153318&ModuleId%20=%202

https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153320&ModuleId=2

https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153322&ModuleId%20=%202

https://www.pib.gov.in/FeaturesDeatils.aspx?NoteId=153315&ModuleId+=+2#_ftn1

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2061660

पीके/केसी/एनएस